प्रातःक्लास पिताश्री ओमशांति 19.10.67

ओमशांति। मीठे2 रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बाप बैठ समझाते हैं। तुम सभी पहले आत्मा हो। यह ....निश्चय रखना है। बच्चे जानते हैं हम आत्माएं परमधाम से आती हैं। यहां शरीर लेकर पार्ट बजाती है। मनुष्य फिर समझते हैं हम शरीर ही पार्ट बजाती हैं। यह है बड़ी ते बड़ी भूल। जिस कारण आत्मा को कोई नहीं जानते। इस आवागमन में हम आत्मा आती–जाती हैं। इस बात को भूल जाते हैं। इसलिए बाप को ही आकर आत्माभिमानी बनाना पड़ता है। यह बात भी कोई नहीं जानते। बाप ही बैठ समझाते हैं आत्मा कैसे पार्ट बजाती है। आत्मा में सारा पार्ट भरा हुआ है। मनुष्यों की मैक्सिमम 84जन्मों से लेकर मिनिमम है एक/दो जन्म। आत्मा को तो पुनर्जन्म लेते ही रहना है। इससे सिद्ध होता है बहुत जन्म लेने वाला बहुत पुनर्जन्म लेते हैं। थोड़े जन्म लेने वाले पुनर्जन्म थोड़े ही लेते हैं। जैसे नाटक में कोई का शुरू से लेकर पिछाड़ी तक पार्ट होता है। यह कोई मनुष्य नहीं जानते। मनुष्य अपनी आत्मा को ही नहीं जानते। आत्मा अपने को ही नहीं जानती तो अपने बाप को फिर कैसे जाने?आत्मा की बात है ना। बाप है ही आत्मा का। कृष्ण तो आत्माओं का बाप है नहीं। कृष्ण को निराकार तो नहीं कहेंगे। साकार में ही उनको पहचाना जाता है। आत्मा तो सबकी है। हर एक आत्मा में पार्ट नूंधा हुआ है। यह बातें तुम्हारे में नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही समझाय सकते हैं। अब तुम बच्चों ने समझा है हम आत्मा 84जन्म कैसे लेती हैं। ऐसे नहीं कि आत्मा सो परमात्मा नहीं। बाप ने समझाया है हम आत्मा पहले2 देवताएं बनती हैं। अभी पतित तमोप्रधान हैं। फिर सतोप्रधान पावन बनना है। बाप आते ही हैं तब जब सृष्टि पुरानी हो जाती है। बाप आय पुराने को नया बनाते हैं। नई सृष्टि स्थापन करते हैं। नई दुनियां में है ही आदि सनातन देवी देवता धर्म। उन्हों लिए कहेंगे पहले कलियुगी शूद्र धर्म वाले थे। तुम सो आत्मा शरीर .....क्योंकि आत्मा का तो धर्म.....ब्रह्मा के मुखवंशावली बन तुम सो ब्राह्मण बने हो। ब्राह्मण कुल में आते हो। ब्राह्मण कुल की डिनायस्टी नहीं होती है। ब्राह्मण कुल कोई राजाई नहीं करते। इस समय भारत में न ब्राह्मण कुल राजाई करते हैं, न शूद्र कुल राजाई करते हैं, न ईश्वरीय कुल राजाई करते हैं। न आसुरी कुल राजाई करते हैं। दोनों को राजाई नहीं है। फिर भी उनका प्रजा का प्रजा पर राज्य तो चलता है। तुम ब्राह्मणों को कोई .....नहीं है। तुम स्टुडेंड बन पढ़ते हो। बाप तुमको ही समझाते हैं यह 84का चक्र कैसे फिरता है। सतयुग ,त्रेता,द्वापर,कलियुग। फिर होता" संगमयुग। इस संगमयुग जैसी महिमा और कोई की नहीं। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। सतयुग से त्रेता में आते हैं तो 2कल कम होती है। तो उनकी महिमा क्या करेंगे। गिरने की महिमा थोड़े ही होती है। कलियुग को कहा जाता है पुरानी दुनियां। अब नई दुनियां स्थापन होनी है। जहां देवताओं का राज्य होता है। वह पुरुषोत्तम....। फिर कला कम होते2 कनिष्ट शूद्र बुद्धि बन जाते हैं। उनको पत्थर बुद्धि भी कहा जाता है। ऐसे पत्थर बुद्धि बन जाते हैं ,जो .....बाप समझ पूजा करते हैं। उनकी जीवन को बिल्कुल ही जानते नहीं। बच्चे बाप के जीवन को न जाने तो वर्सा कैसे मिले?अब तुम बच्चे बाप के जीवन को जानते हो। उनसे तुमको वर्सा मिल रहा है। बेहद के बाप को याद करते हो। तुम मात–पिता.....कहते हैं तो जरूर बाप आया होगा। तब तो सुख घनेरे दिये होंगे ना। बाप कहते हैं मैं आया (हुआ हूं)। अथाह सुख तुम बच्चों को देते हैं। बच्चों की बुद्धि (में) यह नालेज अच्छी रीति रहनी है। इसलिए तुम स्वदर्शनचक्रधारी बनते हो। तुमको अब ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। तुम जानते हो हम सो देवता बनते हैं। अभी शूद्र से ब्राह्मण बने हैं। कलियुग ब्राह्मण भी हैं तो सही ना। वह ब्राह्मण जानते नहीं हैं कि हमारा धर्म अथवा कुल कब स्थापन हुआ ;क्योंकि वह हैं ही.....। तुम अभी प्रजापिता ब्रह्मा के संतान बने हो और सभी से उंच कोटि के हो। बाप बैठ .....की सर्विस ,सम्भालने की सर्विस, सिंगारने की सर्विस करते हैं। तुम भी हो आन गॉडली सर्विस.....

गॉड फादर भी कहते हैं हम आये हैं सब बच्चों की सर्विस में। बच्चों को सुख का रास्ता बताना। बाप कहते हैं अब चलो घर। मनुष्य भक्ति भी करते हैं मुक्ति के लिए। जरूर यह जीवनबंध है। बाप इनके दुःख से छुड़ाते हैं। तुम बच्चे जानते हो त्राहि2 करेंगे। हाहाकार बाद फिर जयजयकार होना है। अब तुम बच्चों की बुद्धि में है कितनी हाय2 करेंगे। जब नैचुरल कैलेमिटीज आदि आवेंगी। यूरोपवासी यादव भी हैं। बाप ने समझाया है यूरोपवासियों को यादव कहा जाता है। इंडिया से बाहर कहां भी जाओ तो यूरोप होगा। अभी तुम जानते हो भगवद् आदि शास्त्रों में कितनी गपोड़े बैठ लिखी हैं। गुड़ियों की जैसे खेल है। पेट से मूसल निकली ,फिर सराप दिया.....अब सराप आदि की तो बात ही नहीं। यह तो ड्रामा है। बाप वर्सा देते हैं, रावण सराप देती है। यह एक खेल बना हुआ है। बाकी सराप देने वाले तो दूसरे मनुष्य होते हैं। उस सराप को उतारने वाले भी होते हैं। बाकी गुरू–गोसाईं आदि से मनुष्य लोग डरते हैं कि कोई सराप न देवे। वास्तव में ज्ञान मार्ग में सराप कोई दे नहीं सकते। ज्ञान मार्ग वा भक्ति मार्ग में सराप की कोई बात नहीं। सराप देने वाले शैतान होते हैं। जो रिद्धी–सिद्धी आदि सीखते हैं। दुःख बहुत देते हैं। पैसे भी बहुत कमाते हैं। भक्त लोग यह काम नहीं करते। बाबा ने यह भी समझाया है संगम के साथ पुरुषोत्तम अक्षर जरूर लिखो। त्रिमूर्ति अक्षर भी जरूर लिखना है और प्रजापिता अक्षर भी जरूर लिखना है ;क्योंकि ब्रह्मा नाम भी बहुतों के हैं। प्रजापिता अक्षर लिखेंगे तो समझेंगे साकार में प्रजापिता ठहरा। सिर्फ ब्रह्मा लिखने से सूक्ष्मवतन वाला समझ लेते हैं। ब्रह्मा ,विष्णु,शंकर को भगवान कह देते। प्रजापिता कहेंगे तो समझाय सकते हो। प्रजापिता तो यहां है। सूक्ष्मवतन में कैसे हो सकता?ब्रह्मा और विष्णु का तो दिखाते हैं नाभी से निकला। तुम बच्चों को अभी ज्ञान मिला है। नाभी आदि की कोई बात नहीं। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा कैसे बनते हैं?सारा चक्र का ज्ञान तुम इन चित्रों पर समझाय सकते हो। सम्मुख समझाने में मेहनत लगती है। फिराय–घुराय तुम समझाय सकते हो। अच्छा शंकर भला किसके नाभी से निकला?बच्चों को यह समझाया है शंकर का कोई पार्ट ही नहीं। यह तो सृष्टि का चक्र फिरता ही रहता है। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा बनते हैं। लक्ष्मी–नारायण 84का चक्र खाय फिर एडॉप्टेड ब्रह्मा–सरस्वती बनते हैं ;क्योंकि सन्यास करते हैं ना। बाबा ने पहले से ही नाम दे दिये हैं। जब भट्ठी बनी तो नाम दिये। फिर कितने चले गए। इसलिए समझाया है ब्राह्मणों की माला होती नहीं ;क्योंकि ब्राह्मण हैं पुरुषार्थी। कब उपर, कब नीचे होते रहते। ग्रहाचारी बैठती है। बाबा तो जवाहरी था। मोतियों आदि की माला कैसे बनती है अनुभवी है। ब्राह्मणों की माला पिछाड़ी में बनती है। समझाना चाहिए जो रुद्रमाला सो ब्राह्मणों की अंत की माला। रुद्र माला सो फिर रुण्ड माला विष्णु की माला बनती है। अंत में ब्राह्मणों की माला। रुद्रमाला रुंडमाला मशहूर है। रुद्रमाला सो रुण्ड माला। रुण्डमाला सो रुद्रमाला। यह बुद्धि में याद रहना चाहिए। हम सो ब्राह्मण फिर देवता बनते हैं। फिर सीढ़ी उतरनी है। नहीं तो 84जन्म कैसे लेंगे?84जन्मों (के हिसाब) से यह निकाल सकते हैं कैसे2 फिर कम जन्म होते जाते हैं। तुम्हारा आधा समय पूरा होता है तो फिर दूसरे धर्म वाले एड होते हैं। माला बनाने में बड़ी मेहनत लगती है। बड़ी सम्भाल से मोतियों को टेबल पर रखा जाता है। कहां ठीक न बनी तो माला तोड़ना पड़े। यह तो बहुत बड़ी माला है। तुम बच्चे जानते हो हम पढ़ते हैं नई दुनियां के लिए। बाबा ने रात्री को भी कहा सलोगन बनाओ। हम शूद्र से (ब्राह्मण) , ब्राह्मण से देवता, फिर देवता से क्षत्रिय.....कैसे बनते हैं आकर समझो। इस चक्र को जानने से तुम चक्रवर्ती .....बनेंगे। स्वर्ग का मालिक बन जावेंगे। ऐसे2 सलोगन बनाय बच्चों को सिखलानी चाहिए। बाबा युक्तियां बहुत बताते हैं। 84जन्मों का भी समझाया है। मैक्सिमम देवताओं के ही 84जन्म हैं। फिर कम ..... वैल्यु तुम्हारी है। तुमको हीरो–हीरोईन का पार्ट मिलता है। हीरे जैसा तुम बनते हो। ..... चक्र लगाय कौड़ी मिसल बनते हो। अब जबकि हीरे जैसा जन्म मिलता है.....

तो कौड़ियों पिछाड़ी क्यों पड़ते हो?ऐसे भी नहीं कोई घर–बार छोड़ना है। बाबा तो कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र रहो और सृष्टि चक्र के नालेज को जानकर दैवी गुण भी धारण करो तो तुम हीरे जैसा बन जावेंगे। बरोबर भारत 5000वर्ष पहले हीरे जैसा था। यह है एम ऑब्जेक्ट। इस (ल.ना.) चित्र को बहुत महत्व देना है। तुम बच्चों को बहुत सर्विस करनी है प्रदर्शनी ,म्यूजियम पर। विहंग मार्ग की सर्विस बिगर तुम प्रजा कैसे बनावेंगे। भल इस ज्ञान को सुनते भी हैं ;परंतु उंच पद कोई विरले ही पाते हैं। उनके लिए ही कहा जाता कोटों में कोउ। स्कॉलरशिप भी कोई लेते हैं ना। 40/50 बालक स्कूल में होते हैं तो उनमें से कोई एक स्कॉलरशिप लेता है। कोई थोड़ा पायस में आ जाते हैं तो उनको भी दे देते हैं। पायस में तो बहुत हैं। आठ दाने हैं सो भी नम्बरवार हैं। पहले2 राजगद्दी पर बैठेंगे फिर कला कम होती जावेगी। ल.ना. का चित्र है नम्बरवन। इनकी भी डिनायस्टी चलती है ;परंतु चित्र इन ल.ना. का ही दिया होता है। यहां तुम जानते हो चित्र भी बदलते रहते हैं। चित्र देने से क्या फायदा?नाम ,रूप,देश, काल सब बदल जाता है। मीठे2 रुहानी बच्चों को रुहानी बाप बैठ समझाते हैं। कल्प पहले भी बाप ने समझाया था। ऐसे नहीं कि कृष्ण ने गोप–गोपियों को सुनाया। न कृष्ण के गोप–गोपियां होते हैं। न कृष्ण को ..... सिखाया जाता है। वह तो है सतयुग का प्रिंस। वहां कैसे राजयोग सिखावेंगे या पतित को पावन बनावेंगे?यह भी बड़ी मूर्खता है, जो कृष्ण का नाम दे दिया है। अब तुम अपने बाप को याद करो। बाप फिर टीचर भी है। टीचर को कब स्टुडेंट कब भूल न सके। बाप को बच्चे भूल न सकें। गुरू को भी भूल न सकें। बाप तो जन्म से ही होता है। टीचर 5वर्ष बाद मिलता है। फिर गुरू वानप्रस्थ में मिलता है। जन्म से ही कोई गुरू करने का कायदा नहीं है। गुरू की गोद लेकर भी फिर दूसरे दिन मर जाते हैं। फिर गुरू क्या करते हैं?गाते भी हैं सदगुरू बिना गत नहीं। सदगुरू को छोड़ वह फिर गुरू कह देते। गुरू तो ढेर हैं। सर्व का सदगति दाता एक ही सदगुरू है। दूसरे सब गुरू हैं। बाबा कहते रहते हैं मांगने से मरना भला। सबको चिंता रहती है हम अपने पैसे कैसे सफल करें दूसरे जन्म लिए। वह ईश्वर अर्थ दान–पुण्य करते हैं तो उसका रिटर्न इस ही पुरानी सृष्टि में मिलता है अल्पकाल लिए। यहां तुम्हारा ट्रांसफर होता है नई दुनियां 21जन्मों लिए। तन–मन–धन प्रभु के आगे अर्पण करना है। सो तो जब आये तब करेंगे। प्रभु को कोई जानते ही नहीं तो गुरू को पकड़ लेते हैं। धन आदि गुरू को अर्पण करते हैं। वारिस नहीं होता है तो सब गुरू को ठोक देते हैं। आजकल कायदे अनुसार ईश्वर को भी कोई देते नहीं हैं। सन्यासी आदि देखो करोड़पति बन गए हैं। इसको कोई दान करना है क्या?बाप समझाते हैं बाप बहुत गरीब हैं। इसलिए मैं आता ही भारत में हूं। तुमको आकर विश्व का मालिक बनाता हूं। डायरैक्ट और इनडायरैक्ट में कितना फर्क है। वह जानते कुछ भी नहीं ,सिर्फ कह देते हैं हम ईश्वर अर्पण करते हैं। हैं सब बेसमझ। तुम बच्चों को अब समझ मिलती है। तो तुम बेसमझ से समझदार बनते हो। बुद्धि में ज्ञान है, बाप तो कमाल करते हैं। जरूर बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलना चाहिए। बाप से ही तुम वर्सा लेते हो दादा द्वारा। दादा भी उनसे वर्सा ले रहे हैं। वर्सा देने वाला एक है। उनको ही याद करना है। ब्रह्मा का चित्र तो तुम रखो भी नहीं। कहते हैं बहुत जन्मों के अंत में आता हूं तो जरूर पतित ही ठहरे ना। इनमें प्रवेश कर इनको भी पावन बनाता हूं, जो फिर यह फरिश्ता बन जाते हैं। बच्चों के लिए सलोगन बनाना है। बहुत अच्छी लिस्ट तैयार करो। यह बैज आदि तुम बहुत निकाल कर सकते हो। यह चीज़ कब किसको मिल न सके। तुम्हारा यह सब है अर्थ सहित। .....लाखों बिक सकती है। खर्चा निकल आवेगा। यह तो जीय दान देने वाले चीज हैं। इनके वैल्यु का भी पता नहीं है। और बाबा को हमेशा बड़ी चीज पसंद आती है, जो कोई दूर से .....के चित्र भी तुमको मिल जावेंगे। अच्छा, मीठे2 बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।